अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

ई-संस्करण

प्रवेशांक

मई 2023

पर्यावरण संरक्षण हमारा दायित्व

वर्ष: 68 अंक: 8

मई 2023

संपादक :
संचय जैन

सह संपादक :
मोहन मंगलम

क्रिएटिव्स :
आशुतोष रॉय

चित्रांकन :
मनोज त्रिवेदी

पेज सेटिंग :
मनीष सोनी

ई-संस्करण :
विवेक अग्रवाल

प्रकाशन मंत्री :
देवेन्द्र डागलिया

पत्रिका प्रसार संयोजक :
सुरेन्द्र नाहटा

गांधीजी ने सत्य, अहिंसा को व्यापक बनाया। उन्हीं के सिद्धांत को 'अणुव्रतों' के माध्यम से व्यावहारिक रूप देने के लिए अणु अस्त्रों के विरुद्ध आंदोलन की चर्चा चलायी जा रही है। अणुबम का बीज स्वार्थ में है। स्वार्थ भावना के अंत का संकल्प ही अणु अस्त्रों का अंत है।

- शंकरराव देव

अध्यक्ष : **अविनाश नाहर**
महामंत्री : **भीखम सुराणा**
कोषाध्यक्ष : **राकेश बरड़िया**

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 2.
दूरभाष : 044-23233345
मोबाइल : 9116634512

www.anuvibha.org
anuvrat.patrika@anuvibha.org

अणुव्रत यात्रा : एक रचनात्मक पहल

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष। अणुव्रत अमृत महोत्सव का ऐतिहासिक प्रसंग। प्रवर्तन के सात दशक बाद भी जीवंत और उपादेय बने रहना अणुव्रत दर्शन की व्यापकता और सार्वभौमिकता को दर्शाता है।

वर्तमान युग में वैज्ञानिक प्रगति ने इंसान की रफ्तार को शतगुणित कर दिया है। कुछ क्षण रुक कर भीतर झाँकने की फुर्सत भी दूभर हो चली है। जीवन के लक्ष्य की समझ और मंजिल की दिशा के भान के लिए अपनी रफ्तार को धीमा कर भीतर झाँकना होता है। संयम के बिना यह संभव नहीं। इसीलिए आज संयम का महत्व और अणुव्रत की प्रासंगिकता और बढ़ गयी है।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण का जीवन संयम का पर्याय है। संयम की साधना के शिखर पुरुष के रूप में उन्होंने संतता की नयी कसौटी गढ़ी है। ऐसे सत्पुरुष जब संयम का संदेश देते हैं तो वह संदेश जन-जन की चेतना को जागृत करने वाला बन जाता है। 50,000 किलोमीटर से अधिक पदयात्रा कर चुके आचार्य महाश्रमण इन दिनों अणुव्रत यात्रा पर हैं। वे प्रतिदिन लगभग 12 से 15 किलोमीटर चलते हैं। यात्रा मार्ग में एकत्र ग्रामीण जनता और बच्चों के समूह के बीच वे छोटी-सी स्टूल पर बैठ जाते हैं और उन्हें सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के प्रति संकल्पित कराते हैं। उनके प्रवचनों में आने वालों में सभी जाति, धर्म और संप्रदाय के लोग होते हैं।

अणुव्रत अमृत महोत्सव के परिप्रेक्ष्य में आचार्यश्री की अणुव्रत यात्रा में अनेक अणुव्रत कार्यकर्ता भी शामिल हो

रहे हैं जो 'अणुव्रत वाहिनी' में यात्रा पथ में आने वाले गाँवों में जन-संपर्क कर लोगों को ऑडियो-विजुअल साधनों से अणुव्रत जीवनशैली से परिचित कराते हैं।

अणुव्रत दर्शन से प्रभावित हो कर अनेक व्यक्ति अणुव्रत के संकल्प स्वीकार करते हैं। अणुव्रत अनुशास्ता के नेतृत्व में अणुव्रत आंदोलन के 75वें वर्ष में इस रचनात्मकता का आगाज निश्चय ही शुभ भविष्य का सूचक है। □

- संचय जैन
sanchay_avb@yahoo.com

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

आचार्य तुलसी

परम्परा, आस्था और उपयोगिता

संस्कारों का निर्वाह आवश्यक है, किन्तु इसमें भी रूढ़ता नहीं आनी चाहिए। एक युग में एक प्रकार के संस्कार होते हैं, दूसरे युग में वे बदल जाते हैं। सब संस्कारों को सुरक्षित रखने की जरूरत भी नहीं है क्योंकि समय और परिस्थितियों का प्रभाव हर वस्तु पर होता है। इस क्रम से हमारा अतीत हमसे छूट जाता है किन्तु उसका अस्तित्व समाप्त नहीं होता। संस्कारों की सुरक्षा होती है, इतिहास से। हजारों वर्ष प्राचीन संस्कारों का परिचय हमें इतिहास के माध्यम से मिल सकता है।

संस्कारों का जहाँ तक प्रश्न है, मैं मानता हूँ कि एक ही प्रकार के संस्कारों का अत्यन्त निर्वाह आवश्यक नहीं है। संस्कार या रूढ़ चिन्तन को बदलने के लिए सबसे पहले व्यक्ति की धारणाओं और विचारों में परिवर्तन होना आवश्यक है। अब तक इसके लिए दोनों प्रकार के प्रयोग कई बार हो चुके हैं। विचार-परिवर्तन के आंदोलन चले हैं और कानूनी स्तर पर भी काम हुआ है। मेरी दृष्टि में जनतन्त्रीय शासन प्रणाली में विचार-परिवर्तन के आधार पर वस्तु-परिवर्तन का क्रम अधिक उचित है क्योंकि विचार-परिवर्तन के अभाव में उस प्रयोग की सफलता के लिए जनता का अपेक्षित सहयोग प्राप्त नहीं किया जा सकता।

परम्परा-परिवर्तन में बहुत बड़ा खतरा है, यदि उसे सम्यक् रूप से न संभाला जा सके। परम्परा के साथ व्यक्ति की आस्था का गहरा सम्बन्ध है। जिस नयी परम्परा को समाज में लाना है, उसके अनुरूप आस्था का निर्माण किये

बिना स्थिति बहुत जटिल बन सकती है। एक आस्था को उखाड़ने के लिए दूसरी आस्था का निर्माण बहुत जरूरी है। जनता की दृष्टि प्रायः स्थूल पर टिकती है। उसके सामने समानान्तर मजबूत स्थिति का निर्माण न हो तो वह अस्थिर हो जाती है। नयी आस्था जमे बिना एक धारणा बनती है कि आज तक जो कुछ किया, वह सब गलत था। इससे अच्छी परम्पराओं के प्रति भी अनास्था का भाव पैदा हो सकता है।

परम्परा-परिवर्तन के बाद भी मनुष्य की आस्था सुरक्षित रह सकती है, किन्तु यह तभी संभव है जबकि नये वातावरण के अनुरूप दूसरी आस्था का निर्माण हो जाये। कुरूढ़ि का सम्बन्ध दो स्थितियों से है। एक स्थिति में परम्परा की उपयोगिता समाप्त हो जाती है, फिर भी वह चालू रहती है। दूसरी स्थिति में परम्परा की कुछ उपयोगिता रहती है किन्तु वह व्यक्ति या समाज पर भार बन जाती है, ऐसी ही परम्परा विकास में बाधक है।

पर्दा-प्रथा प्रत्यक्ष रूप से विकास में बाधा है। किसी समय इसकी उपयोगिता रही होगी किन्तु वर्तमान परिस्थितियों में यह उपहासास्पद-सी प्रतीत हो रही है। इसी प्रकार अन्य बहुत-सी कुरूढ़ियों से विकास-कार्य में बाधा संभव है।

बाल-विवाह एक ऐसी ही परम्परा है जिससे व्यक्तित्व-निर्माण में बहुत बड़ी बाधा पैदा हो जाती है। अध्ययन में अवरोध आता है तथा भावी पीढ़ी अशक्त होती है। छोटी अवस्था में विवाह होने पर एक बालक पर परिवार निर्वाह

का दायित्व आ जाता है। उस अवस्था में दायित्व का समुचित निर्वाह भी संभव प्रतीत नहीं होता। दूसरी बात यह है कि अल्प वय में जो सन्तति होगी, वह भी दुर्बल होगी। इससे सामूहिक विकास में बाधा होगी और जीवन-स्तर उन्नत नहीं बन पाएगा।

हर माता-पिता का अपनी पुत्री के प्रति प्रेम होता है। यह एक स्वाभाविक घटना है। प्रेम नितान्त आन्तरिक वस्तु है। व्यावहारिक जीवन में उसकी अभिव्यक्ति भी होती है। दहेज इसी अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। पिता स्वेच्छा से प्रेमपूर्वक अपनी पुत्री को कुछ देता है, वह वास्तविक दहेज है। किन्तु जहाँ परम्परा-निर्वाह के लिए कुछ देना पड़ता है, माँगकर लिया जाता है, बाध्य होकर देना पड़ता है या प्रदर्शन के लिए दिया जाता है, वह दहेज का प्रशस्त रूप नहीं हो सकता। मूलतः दहेज की परम्परा हजारों वर्ष प्राचीन है। विगत कुछ दशकों से इसमें विकृति का प्रवेश हो रहा है। यह रूपान्तरित स्थिति दहेज परम्परा में पुनः संशोधन की अपेक्षा रखती है। पुनः शोधित परम्परा सामाजिक सम्बन्धों में मधुरता घोल सके तो ठीक, अन्यथा ऐसी भारभूत परम्परा का समापन कर देना ही उचित है।

मूलतः दहेज की परम्परा हजारों वर्ष प्राचीन है। विगत कुछ दशकों से इसमें विकृति का प्रवेश हो रहा है। यह रूपान्तरित स्थिति दहेज परम्परा में पुनः संशोधन की अपेक्षा रखती है।

प्राचीन परम्पराओं और उनके वर्तमान रूपों पर और अनेक तथ्य चिन्तनीय हैं। मूल बात इतनी है कि अर्थहीन रूढ़ परम्पराएं समाज के लिए भार हैं, अतः जागृत जनमानस उनमें संशोधन चाहता है। □

अणुव्रत यात्रा

सद्भावना ■ नैतिकता ■ नशामुक्ति

अणुव्रत अनुशास्ता की ऐतिहासिक अणुव्रत यात्रा

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तन के 75वें वर्ष को देश-विदेश में अणुव्रत अमृत महोत्सव के रूप में व्यापक स्तर पर मनाया जा रहा है। फाल्गुन शुक्ल द्वितीया, 21 फरवरी 2023 को अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने अपने श्रीमुख से अणुव्रत अमृत महोत्सव के शुभारम्भ की घोषणा की। इस शुभ घोषणा के साथ ही अणुव्रत अनुशास्ता ने अपनी पदयात्रा को 'अणुव्रत यात्रा' के रूप में घोषित कर नव इतिहास गढ़ दिया। आचार्यश्री ने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को अणुव्रत यात्रा के मुख्य उद्देश्य निर्धारित किए हैं। ये तीनों ज्वलंत विषय जहाँ देश की वर्तमान परिस्थितियों में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, वहीं अणुव्रत दर्शन का सार-स्वरूप भी।

अणुव्रत अनुशास्ता ने किया अणुव्रत के प्रत्येक कार्यकर्ता में नवऊर्जा का संचार। वीडियो देखने के लिए क्लिक करें..

उदारतापूर्ण अनुदान

एक नयी फोर्स ट्रैवलर मिनी बस खरीद कर इसे अणुव्रत वाहिनी के रूप में तैयार कराया गया जिसमें ऑडियो-विज़ुअल सिस्टम सहित आवश्यक संसाधन स्थायी रूप से उपलब्ध हैं। आर्थिक शुचिता के सिद्धांतों के चलते अणुव्रत वाहिनी के लिए अर्थ की व्यवस्था एक बड़ी चुनौती थी। बेंगलुरु प्रवासी बद्रीलाल जी पितलिया और कैलाश जी बोराणा ने जिस उदारता के साथ अनुदान की 31 लाख की राशि अणुविभा को उपलब्ध करायी, इसकी जितनी प्रशंसा की जाये, कम होगी। इस सम्पूर्ण क्रम में अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर का लगनपूर्ण श्रम विशेष उल्लेखनीय रहा।

अणुव्रत वाहिनी का लोकार्पण

28 मार्च को आचार्य प्रवर की पावन सन्निधि में 'अणुव्रत वाहिनी' का लोकार्पण किया गया। आचार्य प्रवर ने अपने पावन उद्‌बोधन में कहा कि परम पूज्य आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन का यह 75वाँ वर्ष है। इस अणुव्रत अमृत वर्ष में हम भी अणुव्रत यात्रा कर रहे हैं और जनता को सद्‌भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का सन्देश देने का प्रयास कर रहे हैं। अणुव्रत की संयम की बात आदमी के लिए बहुत काम की बात है। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी मुख्य रूप से अणुव्रत का काम

कर रही है। अनेक अणुव्रत समितियाँ भी इसमें सहयोगी बन रही हैं। कार्यकर्ता निष्ठा के साथ काम करते रहें, यह अच्छी बात है। अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कहा कि अणुव्रत यात्रा के रूप में आचार्य प्रवर ने अणुव्रत आंदोलन को एक ऐतिहासिक सौगात दी है। देशभर में अणुव्रत कार्यकर्ता इस घोषणा के बाद उत्साहित हैं और अणुव्रत अमृत महोत्सव के वैविध्यपूर्ण प्रकल्पों को गति प्रदान कर रहे हैं। अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा ने कार्यक्रम का संयोजन किया। अणुविभा के निवर्तमान अध्यक्ष संचय जैन, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा व विनोद कोठारी सहित अनेक कार्यकर्ताओं की सहभागिता इस मौके पर रही।

प्रथम दल ने लिया आशीर्वाद

30 मार्च को अणुव्रत अनुशास्ता का आशीर्वाद प्राप्त कर 'अणुव्रत वाहिनी' में अणुव्रत कार्यकर्ताओं का प्रथम दल संपर्क अभियान पर रवाना हुआ। अणुव्रत वाहिनी का प्रतिदिन का एक क्रम बनाया गया है। आचार्यप्रवर जिस गाँव में विराजते हैं, कार्यकर्ता उससे अगले पड़ाव तथा रास्ते में आने वाले गाँवों में संपर्क करते हैं और डॉक्यूमेंट्री फिल्म और संवाद के माध्यम से गाँववासियों को अणुव्रत के दर्शन और यात्रा के उद्देश्यों से परिचित कराते हैं।

दूसरे दिन जब अणुव्रत अनुशास्ता उसी मार्ग से पदयात्रा करते हुए पधारते हैं तो वे स्वयं रुककर उपस्थित जनता से संवाद करते हैं और इच्छुक व्यक्तियों को अपने श्रीमुख से संकल्प दिलाते हैं। □

'अणुव्रत : एक बेहतर जीवनशैली' - अणुव्रत यात्रा के संदर्भ में यह डॉक्युमेंट्री अवश्य देखें। वीडियो पर क्लिक करें..

अणुव्रत गीत

संयममय जीवन हो।
नैतिकता की सुर-सरिता में जन-जन मन पावन हो।
संयममय जीवन हो।।

अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा।
वर्ण, जाति या सम्प्रदाय से, मुक्त धर्म की भाषा।
छोटे-छोटे संकल्पों से, मानस-परिवर्तन हो।
संयममय जीवन हो।।

मैत्री-भाव हमारा सबसे, प्रतिदिन बढ़ता जाए।
समता, सह-अस्तित्व, समन्वय-नीति सफलता पाए।
शुद्ध साध्य के लिए नियोजित, मात्र शुद्ध साधन हो।
संयममय जीवन हो।।

विद्यार्थी या शिक्षक हो, मजदूर और व्यापारी।
नर हो नारी बने नीतिमय, जीवनचर्या सारी।
कथनी-करनी की समानता, में गतिशील चरण हो ।
संयममय जीवन हो।।

प्रभु बनकर के ही हम, प्रभु की पूजा कर सकते हैं।
प्रामाणिक बनकर ही, संकट सागर तर सकते हैं।
शौर्य-वीर्य-बलवती अहिंसा, ही जीवन-दर्शन हो।
संयममय जीवन हो।।

सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।
'तुलसी' अणुव्रत-सिंहनाद, सारे जग में प्रसरेगा।
मानवीय आचार-संहिता, में अर्पित तन-मन हो।
संयममय जीवन हो।।

अणुव्रत आंदोलन प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी द्वारा रचित प्रेरणा का संचार करने वाले इस अणुव्रत गीत को मीनाक्षी भूतोड़िया की आवाज़ में सुनने के लिए इस चिह्न पर क्लिक करें...

■ मुनि कमलकुमार ■

अणुव्रती : धरती का शृंगार

अणुव्रत आचार संहिता मानवीय गुणों से संपन्न होने की वजह से हर वर्ग, हर संप्रदाय के लिए अनुकरणीय, आदरणीय और आचरणीय है। देश-विदेश में गुरुदेव की कृपा से भ्रमणकाल में ऐसा अनुभव किया। जहाँ भी अणुव्रत का संदेश लेकर गये, चाहे वह स्कूल हो, कॉलेज हो, यूनिवर्सिटी हो, सुधारगृह हो, थाना-कचहरी, मंदिर-मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च, मठ, आश्रम, सत्संग भवन, उद्योगगृह आदि स्थानों में लोगों ने कहा कि इसे अपनाने में कोई दिक्कत नहीं क्योंकि अणुव्रत व्यक्ति को नैतिक, निर्व्यसनी और सदाचारी बनाता है।

वर्तमान युग में इसका व्यापकता से प्रचार-प्रसार किया जाये तो आज जो नित नयी समस्याएं सामने आ रही हैं, उन पर विराम लग सकता है।

गुरुदेव तुलसी एक साधनानिष्ठ और दूरदर्शी आचार्य थे। उन्होंने जैन-कल्याण के लिए नहीं, जन-कल्याण के लिए अणुव्रत आंदोलन प्रारंभ किया। हर वर्ग के लिए नियमावलियाँ बनायीं। अनेक मतावलंबियों, विद्वानों, राजनेताओं, उद्योगपतियों के साथ चर्चा-वार्ता की। सभी ने इसका हृदय से स्वागत किया। किसी ने इसका प्रतिकार नहीं किया। मानव-मन की दुर्बलता ही समझनी चाहिए कि सब कुछ जानते हुए और मानते हुए भी उसे नैतिक बनने में संकोच हो रहा है।

सब जानते हैं कि अप्रामाणिकता समस्याओं की जननी है, फिर भी प्रामाणिक जीवन जीने वाले बहुत कम नजर

आ रहे हैं। जिनका संकल्प मजबूत होता है, वे जीवन के हर क्षेत्र में प्रामाणिक बनकर शान्ति और आनंद का जीवन जीते हैं।

आज हम देख रहे हैं कि लोगों की धार्मिक आस्था बढ़ रही है। इतने धर्म स्थान बने हुए हैं, जिनमें कहीं-कहीं तो लोगों को पंक्तियों में लंबे समय तक एकमात्र दर्शन के लिए खड़ा रहना पड़ता है और दूसरी तरफ उन्हीं धार्मिकों को व्यसनी, दुराचारी और अनैतिक देखते हैं तब लगता है कि यह धार्मिक केवल उपासना के लिए ही तत्पर रहता है। इसका चरित्रबल शून्य-सा प्रतीत होता है।

अणुव्रत व्यक्ति को उपासना से चरित्र की ओर गतिमान बनाता है। व्यक्ति चरित्रवान बन जाता है तो वह धरती का शृंगार या अवतार संज्ञा को प्राप्त कर लेता है। वर्तमान में धनवान, विद्वान, बलवान, श्रीमान लोगों का बाहुल्य देखने को मिलता है परंतु चरित्रवान लोगों का तो मानो दुष्काल-सा नजर आता है। छोटे से लेकर बड़ों तक, गरीब से लेकर धनवान तक, अनपढ़ से लेकर पढ़े-लिखे तक, विवाहितों से लेकर अविवाहितों तक पर भी ध्यान से देखें तो आज नैतिकता का अभाव होता जा रहा है।

पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के अणुव्रत आंदोलन को आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने मुख्यता प्रदान की। वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमण इसे गति प्रदान कर रहे हैं। यह वर्ष अपने आप में महत्वपूर्ण है क्योंकि यह अणुव्रत का 75वाँ वर्ष है। आचार्य श्री महाश्रमण जी समयज्ञ पुरुष हैं। उन्होंने इस वर्ष की अपनी यात्रा का नाम भी अणुव्रत यात्रा दिया है। गाँव-गाँव में अणुव्रत यात्रा के माध्यम से लोगों को व्यसनमुक्ति और प्रामाणिकता की शिक्षा दी जाती है। अणुव्रत से जुड़ने वाले व्यक्ति, परिवार और समाज का निश्चित उद्धार कहा जा सकता है। इसका जितना प्रचार-प्रसार हो, मानवता का उतना ही भला होगा। □

पेड़-प्रकृति परिवार

■ डॉ. रामनिवास 'मानव' ■

पेड़ कटे, जंगल घटे, मौसम हुआ उदास।
लेकिन चिट्ठी दर्द की, भेजे किसके पास।।

चिड़िया बैठी घोंसले, साधे बिल्कुल मौन।
दर्द-भरी उसकी कथा, लेकिन समझे कौन।।

जीने के अधिकार की, खारिज हुई दलील।
मौसम ने की क्रूरता, मरी प्यास से झील।।

ऋतुएँ भूली चाल हैं, चिड़िया भूली गीत।
छाँव कहीं भटकी फिरे, गर्मी से भयभीत।।

पर्वत सब नंगे हुए, सूखे सारे खेत।
विवश देखती है नदी, भर आँखों में रेत।।

पानी पर पहरा लगा, फिरे भटकती प्यास।
अब दुनिया करने लगी, जीवन का उपहास।।

सूखा-सूखा खेत है, खड़ा बिजूका बीच।
भरकर अंजलि आग की, मौसम रहा उलीच।।

सूख गयी हरियालियाँ, फसलें हुईं तबाह।
कोल्हू जैसी जिंदगी, फिर-फिर रही कराह।।

वट-पीपल के देश में, पूजित आज कनेर।
बूढ़ा बरगद मौन है, देख समय का फेर।

धरती माँ, सूरज पिता, पेड़-प्रकृति परिवार।
पर्यावरण को समझिये, जीवन का आधार।।

जड़ों से जुड़ाव है जरूरी

डॉ. कमलाकांत शर्मा 'कमल', भीलवाड़ा

किसी ने उड़ती चिड़िया से पूछ लिया, इस असीम आकाश में यहाँ-वहाँ हर समय उड़ती रहती हो, क्या तुम्हें अपने खो जाने का डर नहीं लगता? चिड़िया ने बड़ी सरलता से जवाब दिया - जी नहीं, मैं अपने घर की चौखट को पहचानती हूँ और मैं कितनी ही ऊँची उड़ूँ, मैं अपने घर-आँगन से अलग नहीं होती।

सचमुच संसार रूपी आकाश में उड़ने वाला चिड़िया रूपी व्यक्ति जब तक अपनी जमीन, अपना घर-आँगन, अपने माता-पिता, अपने बंधु-बांधव, परिजन, अपने समाज, अपनी संस्कृति, सभ्यता, आदर्श और मानवोचित कर्मों को भूलता नहीं, उसे इस विराट और विशाल संसार में भटकने-खोने का भय नहीं होता। वहीं, व्यक्ति अपने जीवन में कितने ही ऊँचे पायदान पर खड़ा हो जाये, किन्तु ऊँचाइयों के सोपान पर खड़ा होकर अपने पैरों के नीचे की धरती को भुला बैठता है तो उसका पराभव उससे ज्यादा दूर नहीं होता?

जीवन-जगत की अनेक ऊँची-नीची, प्रशस्त अथवा दुर्गम पगडण्डियों पर पाँव धरता हुआ व्यक्ति कमशः आगे बढ़ता चला जाता है, और इसी का नाम जीवन है। चरैवेति चरैवेति - चलते रहो, बढ़ते रहो आगे से आगे किन्तु आगे बढ़ने की सार्थकता केवल चलने भर में नहीं है, आगे बढ़ने की सार्थकता है - सही जीवन-लक्ष्य। व्यक्ति का जीवन सदैव अनुकूल परिस्थितियों पर ही निर्भर नहीं होता, जीवन की धूप-छाँव में तपकर जीवन-प्रयोजन को

रेखांकित करने वालों ने हमेशा अपने आचरण से, व्यवहार से, भाषा (वाणी) से एक नयी इबारत लिखी है समय के पन्नों पर। आम आदमी जीवन की तमाम आपाधापी के बीच, पूरे आत्मबल के साथ जिस सार्थक मुकाम पर पहुँचता है, वह दुरूह और असम्भव नहीं होता तो एकदम सहज और सरल भी नहीं होता।

युग करवट लेता है तो अनेक पुरानी मान्यताएँ उसकी करवट तले चूर-चूर हो जाती हैं और कुछ नयी मान्यताएँ उभरने लगती हैं। इतने पर भी हमें एक ऐसी जमीन की दरकार तो अवश्य होती ही है जिसका आकार विशाल हो, नींव मजबूत हो तथा जिस पर सौन्दर्य का कंगूरा चमकता हो। जीवन के कड़वे-खट्टे अनुभवों के आकाशभेदी शिलाखण्ड, जीवन की कटुता, विकटता, विडम्बना और विसंगतियों का एहसास भी कराते हों। सही मायनों में यही यथार्थ की जमीन होती है, और इसी पर अधिक समय तक रुका जा सकता है। मगर अफसोस, आदमी को आज अपनी जमीन छोड़ने में कुछ भी देरी नहीं लगती। वह मिट्टी, जिसके बिना धरती का अस्तित्व सम्भव नहीं, परंतु विडम्बना देखिए कि आज

का जनसामान्य उसी मिट्टी से दूर भागना चाहता है। ऐसे में जरूरी है कि जमीन से – अपनी जड़ों से जुड़ाव बनाए रखिए। इस जुड़ाव के बिना दुनिया की तमाम दौलत, शोहरत और मकबूलियत कोई मायने नहीं रखती। मनुष्य की पहचान है उसका चरित्र, चरित्र को सम्पादित करते हैं उसके विचार, और विचारों की कसौटी बनता है व्यवहार। व्यवहार का आधार है जीवनशैली, जीवनशैली का निर्धारण करता है दर्शन, और दर्शन की नींव रखता है स्वयं मनुष्य।

तो विचार इन बिन्दुओं पर भी होना चाहिए कि आज के मनुष्य की जीवनशैली कैसी है? वह उसे किधर ले जा रही है? वह किसी के लिए नीड़ बनाता है या बने हुए नीड़ों को उजाड़ने का काम करता है? वह किसी के जीवन का आधार बनता है या जीने वालों की साँसें छीनता है? वह किसी को जोड़ता है या पीढ़ियों से जुड़े हुए रिश्तों को तोड़ता है? वह जीवन को संवारने के लिए धर्म का आश्रय लेता है या अपनी ही अहमन्यता को प्रधानता देता है? इन समस्त प्रश्नों के चौराहों पर फैलते जा रहे गुमनाम अंधेरों में समाधान की मशाल जलाने का दायित्व किसका बनता है?

मनुष्य की पहचान है उसका चरित्र, चरित्र को संपादित करते हैं उसके विचार, और विचारों की कसौटी बनता है व्यवहार

कहा जाता है कि चलने का मूल्य है, परन्तु उससे भी अधिक मूल्य सही – लक्ष्यपूर्ण दिशा में चलने का होता है। जिसका दृष्टिकोण सही है, उसका आचरण प्रशस्त है और ऐसे व्यक्ति विकट से विकट परिस्थितियों में भी जड़-जमीं से नाता नहीं तोड़ते।

आइए, संस्कृति, संस्कार और इस देश की समृद्ध विरासत को सहेजने-सम्भालने का समयोचित यत्न करें, नयी पौध को संस्कारों का खाद दें, विवेकपूर्ण, बौद्धिक क्षमता का खेत दें, सार्थक और पालनीय परम्पराओं का निर्मल मीठा जल दें, प्यार, स्नेह, सहयोग और भाईचारे का संरक्षण दें, मानवोचित कर्मों की प्राणवायु प्रदान करें, तो जो फसल आने वाले समय में हमारे समक्ष आएगी, निःसन्देह वह न केवल हमें ही, अपितु पूरे विश्व को परिपुष्ट और समर्थ कलेवर प्रदान कर सकेगी। इसलिए जरूरी है कि सबसे पहले हम स्वयं अपनी जड़ों से जुड़ाव बनाकर चलें। जड़ों को भूलकर पत्तों को सींचने वाले लोग ज्यादा समय तक स्पन्दित नहीं हो पाते। इसलिए जिस पथ पर हम बढ़ रहे हैं, उस पर हमारी मौलिक पहचान अवश्य रेखांकित होनी चाहिए और यदि इतना भी हम कर पाते हैं तो अपने जीवन की सार्थकता समझिए। □

नई पीढ़ी का सर्वांग संतुलित दिशा-दर्शन करने वाली प्रतिष्ठित पत्रिका **'बच्चों का देश'** नौनिहालों को स्वस्थ मनोरंजन के साथ जीवन निर्माण का मार्ग सुझाती है। गत दो दशकों से प्रकाशित हो रही इस पत्रिका का नवीनतम अंक पढ़ने के लिए पुस्तक पर क्लिक करें..

पर्यावरण संरक्षण एवं हमारा दायित्व

अप्रैल अंक में प्रस्तुत परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु –

जैव विविधता संरक्षण के उपाय अपनाएँ

विश्व की लगभग 800 करोड़ जनसंख्या को भोजन कपड़ा, मकान, स्वस्थ जीवन हेतु औषधियों आदि की आपूर्ति पृथ्वी पर उपस्थित 10 लाख से अधिक जैव विविधता (पादप, जंतु, बैक्टीरिया आदि) से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से होती है। अत: मानव जाति को यदि बचाना है तो हमें धरती पर उपस्थित प्रत्येक जीव के संरक्षण व संवर्धन के प्रयास करने होंगे। वन्यजीव भोजन एवं पानी की तलाश में बस्तियों में आ जाते हैं, अतः हमारी जिम्मेदारी है कि पारिस्थितिकी तंत्रों को स्वस्थ तथा संतुलित रखते हुए उसमें उपस्थित खाद्य श्रृंखला के किसी भी घटक को क्षति न पहुँचाएँ।

– डॉ. आर. के. गर्ग, उदयपुर

छोटे-छोटे बदलावों से बनेगी बात

हम अपने दैनिक कार्यों में छोटे-छोटे बदलाव करके पर्यावरण के संरक्षण के दायित्व का पालन बखूबी कर सकते हैं। पेड़ धरती के फेफड़े की तरह हैं, हवा की

गुणवत्ता को बनाये रखने के लिए ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाने चाहिए, पेड़ों की रक्षा करनी चाहिए। पानी का दुरुपयोग न हो, बिजली तथा पेट्रोल का किफायती उपयोग करें, पॉलीथिन की जगह कपड़े या जूट के थैले साथ में रखें। **– रश्मि चोरड़िया, दिनहटा**

प्रकृति का संतुलन बनाये रखना होगा

शुद्ध पर्यावरण के बिना हम उत्तम जीवन नहीं जी सकते हैं। वायु, जल और ध्वनि प्रदूषण – तीनों ही प्रदूषण पर पूरा नियंत्रण करना होगा। प्रकृति का संतुलन बनाये रखने के लिए मानव और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाये रखना बहुत जरूरी है। प्रकृति का संतुलन बिगड़ने से मानव जाति को खतरे का सामना करना पड़ेगा। इसलिए संपूर्ण मानव जाति को पर्यावरण का संतुलन बिगड़ने से होने वाले महाविनाश के बारे जागरूक करना होगा। **– डॉ. निशा नंदिनी भारतीय, तिनसुकिया**

देसी नस्ल की गायों का संरक्षण जरूरी

जब तक धरती पर शुद्ध माटी रहेगी और बरसात सही होगी तो पूरी सृष्टि का काम सही तरीके से होता रहेगा। सबसे पहले इनको बचाना है और इसके लिए देसी गायों का संरक्षण बहुत जरूरी है। 1800 ईस्वी में भारत में 20 करोड़ की जनसंख्या में लगभग 84 करोड़ गायें थीं, वहीं आज 125 करोड़ की जनसंख्या में सिर्फ 5 करोड़ गायें बची हैं। वैज्ञानिक भी मानते हैं कि देसी गायों को बचाने से माटी और जल अपने आप बचेगा तथा पूरी सृष्टि खुशहाल व स्वस्थ रहेगी। **– महावीर बागरेचा, कोप्पल**

'उबंटू' के दर्शन को अपनाना होगा

सतत एवं समावेशी विकास के लिए पर्यावरण संरक्षण के प्रति हमारा दायित्व अपरिहार्य है। हमें ब्रह्मांड, सभी जीवों तथा समूची प्रकृति के अंतर्संबंधों की अनिवार्यता अखंडता को समझना होगा। ऐसे समय में हमें 'उबंटू' के

दर्शन को अपनाना होगा जिसका अर्थ है आप हैं, तो मैं हूँ। अर्थात् पर्यावरण संरक्षित रहेगा तो मनुष्य सुरक्षित होगा।

– मनीता जैन, बीकानेर

अणुव्रत के नियम से बचेगा पर्यावरण

अणुव्रत का एक नियम है – मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा, हरे भरे वृक्ष नहीं काटूँगा, पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा। इस संकल्प को अपना कर हम पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान दे सकते हैं। पौधे लगाएँ जिनसे पर्यावरण शुद्ध एवं संरक्षित होता है। वाहनों का अधिक उपयोग न करें, वर्षा के जल का संरक्षण करें।

– मुकेश डूंगरवाल, कटक

आगामी परिचर्चा का विषय

बच्चों के साथ कैसा हो हमारा व्यवहार!

आज के बच्चे कल का भविष्य होते हैं। बच्चों के प्रति कितने संवेदनशील हैं हम – हमारे अपने बच्चों के और दूसरों के भी! हम अपनी महत्वाकांक्षाओं के बोझ तले उन्हें तनावग्रस्त तो नहीं कर रहे? प्रतिस्पर्द्धा के माहौल से क्या हैं फायदे और क्या हैं नुकसान? पीढ़ियों का अंतराल कहीं दूरियाँ तो नहीं बढ़ा रहा है? ये प्रश्न सोचने को मजबूर करते हैं।

बच्चों के साथ कैसा हो हमारा व्यवहार! – इस विषय पर सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं। अपने विचार अधिकतम 200 शब्दों में हमें 20 मई तक व्हाट्सएप के माध्यम से भेजें।

9116634512

गाँव के लालजी साहू को संभागीय आयुक्त (डीसी) के जनता दरबार में उपस्थित होने को कहा गया था। ग्रामसेवक गाजोडीह के जिन पाँच लोगों को इस आशय का पत्र दे गया था, उनमें लालजी साहू भी एक था। किस कारण से बुलाया जा रहा है, पत्र में इसका कोई उल्लेख नहीं था। अभी तक लालजी साहू का जीवन विधायक-मंत्री के इर्द-गिर्द घूमता रहा है। अब पहली बार जनता दरबार में डीसी, सीओ, बीडीओ के साथ बैठने का मौका मिलने जा रहा था।

पंद्रह बरस पहले वह दस टके का भी आदमी नहीं था। एक दिन किसी के कहने पर मेरे ऑफिस में चला आया और बोला, मुझे सिविल में छोटा-मोटा कोई काम दिला दीजिए। काम मिला चार हजार का। ऑफिस कैम्पस की झाड़ी कटाई और साफ-सफाई का। सप्ताह भर में काम कर दिखाया। दूसरा काम मिला नाली सफाई का। लालजी ने साल भर में छोटा-बड़ा मिलाकर सात काम किये और बाइक खरीद ली।

वही लालजी साहू आज दो ट्रक और एक स्कॉर्पियो का मालिक है। आज अचानक डीसी के जनता दरबार में

उपस्थित होने का पत्र पाकर वह फूला नहीं समा रहा था। गुदगुदाता मन लिये लालजी सुबह-सुबह गाँव के अपने घनिष्ठ मित्र धनीराम महतो के घर जा रहा था। पता चला उसे भी पत्र मिला है। मोड़ पर सुदन महतो की विधवा पत्नी सुखमुनी मिल गयी। साल भर से विधवा पेंशन के लिए मुखिया से लेकर बीडीओ तक के आगे दौड़ लगा-लगा कर थक चुकी थी। सिर्फ आश्वासन ही मिलता रहा।

''कहाँ जा रही है काकी?'' लालजी साहू ने टोका।

''हमर पेंशनवा कहाँ पास हुआ है बाबू! सुना है कि जिला के बड़का साहब आये हैं, वहीं जा रही हूँ।''

''ठीक है, जाओ। मैं भी आ रहा हूँ।''

''तुम्हें भी पेंशन पास करवाना है क्या?''

''नहीं काकी!''

इस तरह लोगों से मिलते-बात करते लालजी साहू पहुँचा धनीराम के घर।

''जनता दरबार में हमनी के काहे बुलाया गया है? कुछ पता चला?'' लालजी साहू को घर आया देख धनीराम पूछ बैठा।

''चलके देखिए लेते हैं न!'' लालजी साहू बोला।

''सुना है, जयालाल को भी बुलाया है, चलो उसे भी साथ ले चलते हैं।'' थोड़ी देर बाद दोनों जयालाल के घर पहुँचे। पता चला, वह घर से निकल चुका है।

स्कूल के मैदान में दूर से ही सरकारी तामझाम नजर आ रहा था। जयालाल मंच के नीचे सामने कुर्सी पर बैठा नजर आ गया। धनीराम और लालजी उसी दिशा में बढ़ गये। तभी मंच संचालक ने लालजी साहू, धनीराम महतो और जयालाल को सादर मंच पर आकर आसन ग्रहण करने को कहा। डीसी साहब मंच पर विराजमान थे। बीडीओ और सीओ पेंशन धारियों तथा राशन कार्ड वालों

की शिकायतों का निपटारा करने में लगे हुए थे। लोग कतारबद्ध एक-एक कर आगे बढ़ रहे थे। उन्हीं लोगों के बगल से वे तीनों मंच की ओर बढ़े। एक-दूसरे को कोंचते-ठेलते हुए-से। मंच संचालक ने तीनों को कुर्सी पर बैठने का इशारा किया तो बैठने के साथ ही तीनों अपनी-अपनी बेकाबू धड़कन को सामान्य करने में लग गये, परंतु तरह-तरह की शंकाओं ने उन्हें घेर लिया था।

जन सुनवाई के तुरंत बाद ही डीसी साहब ने माइक पकड़ लिया, ''हेलो! आप सभी को मेरा पुनः नमस्कार...प्रणाम! आज यहाँ जनता दरबार की जन सुनवाई में जिन लोगों का काम हुआ, उनसे बस इतना ही कहना है कि आप अपनी माँगों और कामों को लेकर इसी तरह जागरूक रहें। वृद्धापेंशन, आवास प्रमाण पत्र और राशन कार्ड के मामले में हम लापरवाही या धांधली बर्दाश्त नहीं करेंगे।''

डीसी साहब थोड़ा रुकते हुए बोले, ''आप लोगों से आग्रह है दस मिनट शांति बनाये रखें, अभी आप लोगों को आप ही के बीच के कुछ बड़े लोगों से मिलवाते हैं।'' डीसी साहब ने बीडीओ साहब को कुछ इशारा किया। बीडीओ साहब हाथ में माला लेकर खड़े हो गये।

''इनसे मिलिए। लालजी साहू जी से.., आप सभी इन्हें

अच्छी तरह से जानते पहचानते होंगे, आप ही के बीच पले-बढ़े हैं। सामने आइए लालजी साहू जी!''

लालजी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। अवाक्! हैरान! किंकर्त्तव्यविमूढ़-सा आगे बढ़ा। बीडीओ साहब ने माला पहनाकर उसका स्वागत किया। डीसी साहब ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा -

''लालजी साहू का जीवन में इतना आगे बढ़ना.. आज बड़े आदमी के रूप में पहचाना जाना बड़ी बात है। और जब बड़े लोगों में गिनती होने लगे तो आदमी को छोटा काम खुद छोड़ देना चाहिए, इसी में बड़प्पन है। अब मैं लालजी साहू जी से कहूँगा कि ये अपना राशन कार्ड सरकार को वापस कर दें!''

''लेकिन सर!'' लालजी साहू ने कुछ कहना चाहा तो बीच में ही डीसी साहब ने टोक दिया, ''मुझे मालूम है आपका राशन कार्ड आपके पास नहीं है, आपने अपना राशन कार्ड दुखिया तुरी को दे रखा है, बदले में दुखिया तुरी की पत्नी आपके घर के सारे काम कर देती है। एम आई राइट लालजी साहू जी!'' लालजी साहू के मुँह से 'न' शब्द नहीं निकल सका।

अब बारी थी धनीराम महतो की। उसे देखकर लग रहा था जैसे उसका मन मंच से कूद जाने का कर रहा हो। तभी डीसी साहब बोल उठे,''मैं समझ सकता हूँ धनीराम जी इस वक्त क्या सोच रहे हैं! आप भी यहाँ पधारें। आपका राशन कार्ड...!''

यह सुनते ही धनीराम और जयालाल दोनों ने सिर नीचा करके राशन कार्ड लौटाने पर सहमति जतायी। सारे लोग ठहाका लगाकर हँस पड़े। डीसी साहब भी मुस्कुराये बिना नहीं रह सके। राजनैतिक संरक्षण में आसमानी उड़ान भरने वाले आज मानो जमीन पर औंधे मुँह गिरे थे। सुखमुनी आज गद्गद थी। उसकी पेंशन भी मंजूर हो गयी थी। □

गौरवशाली अतीत के झरोखे से

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष स्वर्णिम इतिहास के असंख्य पन्नों से परिपूर्ण हैं। अणुव्रत अमृत महोत्सव के इस ऐतिहासिक प्रसंग पर इन्हीं में से कुछ पन्ने हम सुधी पाठकों के लिए यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, इस आशा और विश्वास के साथ कि ये संस्मरण हम सब को अणुव्रत-पथ पर कदम दर कदम आगे बढ़ते रहने को प्रेरित करेंगे।

इन संस्मरणों की आधारभूमि है आचार्य तुलसी के जीवनवृत्त पर आधारित एवं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा द्वारा सम्पादित महाग्रंथ ''मेरा जीवन : मेरा दर्शन।''

पंजाब समस्या का समाधान

9 जुलाई 1985 को अकाली दल के अध्यक्ष श्री हरचन्दसिंह लोंगोवाल तथा श्री सुरजीतसिंह बरनाला आमेट आये। आचार्य श्री तुलसी, युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ, साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभा, सन्त लोंगोवाल, श्री बरनाला और शुभकरण दसानी साथ बैठे। पंजाब की चर्चा काफी विस्तार से हुई।

रात्रि में सार्वजनिक सभा का आयोजन हुआ। लगभग 15000 की उपस्थिति थी। आचार्य श्री तुलसी ने अपने प्रवचन की पृष्ठभूमि में पंजाब की समस्या के समाधान में सन्तों की भूमिका पर प्रकाश डाला। सन्त लोंगोवाल के साथ हुए वार्तालाप के सन्दर्भ में उन्होंने कहा – ''हमारा यह प्रथम मिलन है। मुझे लगा कि हम दोनों के विचारों में

बहुत समानता है। सन्तजी ने मुझे बताया कि वे देश की एकता व अखण्डता के पूरे पक्षपाती हैं। खालिस्तान की बात हिन्दुस्तान में रहने वाला भारतीय आदमी सोच ही कैसे सकता है?''

आतंकवाद की समस्या को समाहित करने की दिशा में आचार्य श्री ने कुछ बिन्दु सुझाये- पंजाब की समस्या का समाधान बातचीत के द्वारा होना चाहिए। हिंसा को इसमें कोई स्थान नहीं मिलना चाहिए। बातचीत के लिए स्वस्थ वातावरण के निर्माण में जनता और सरकार, दोनों को सहयोग करना चाहिए। जहाँ कहीं किसी भी व्यक्ति या वर्ग द्वारा हिंसा होती है, उसकी खुले शब्दों में भर्त्सना होनी चाहिए। किसी कौम में कोई व्यक्ति खराब हो सकता है, किन्तु उसे लेकर पूरी कौम को खराब बताना, बदनाम करना उचित नहीं होगा। सिख कौम एक बहादुर कौम है। वह राष्ट्रभक्त है। कुछ व्यक्तियों के कारण सारे सिखों के प्रति अविश्वास करना क्रूरता होगी।

सन्त लोंगोवाल ने कहा -''सिख धर्म को बदनाम करने के लिए कुछ भ्रान्तियाँ फैलायी जा रही हैं। सबसे पहले भ्रान्तियों का निराकरण जरूरी है।''

आचार्य श्री को संवाद मिला कि पंजाब समस्या का समाधान हो गया। प्रधानमंत्री राजीव गांधी और अकाली दल के अध्यक्ष सन्त हरचन्दसिंह लोंगोवाल के बीच 24 जुलाई 1985 को हस्ताक्षरपूर्वक समझौता हो गया।

सर्वत्र प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। आचार्य श्री की ओर से राजीव गांधी और लोंगोवाल, दोनों को बधाई के संदेश भेजे गये। 27 जुलाई को गृहमंत्री श्री शंकरराव चव्हाण स्पेशल प्लेन से उदयपुर पहुँचे। वहाँ से कार द्वारा वे आमेट आये। आचार्य श्री तुलसी से साक्षात्कार होते ही उन्होंने पंजाब समस्या के समाधान के लिए बधाई दी। वे भावविह्वल होकर बोले–''आचार्यजी! यह समझौता आपके ही आशीर्वाद से हुआ है।''

अणुव्रत भवन में प्रधानमंत्री राजीव गांधी

5 दिसम्बर 1987 को प्रातः आचार्य श्री तुलसी साधु-साध्वियों के साथ अणुव्रत भवन के हॉल में उपस्थित थे। सीमित संख्या में श्रावक-श्राविकाओं की भी उपस्थिति थी। इसी बीच प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने अणुव्रत भवन में प्रवेश किया। प्रधानमंत्री के बैठने के लिए वहाँ कुर्सी रखी हुई थी। कुर्सी पर बैठते-बैठते वे रुक गये और बोले – ''आपके सामने ऊपर बैठना अजीब-सा लगता है।'' इतना कहकर वे नीचे बिछे कालीन पर बैठ गये।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा और युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ के वक्तव्य हुए। आचार्य श्री तुलसी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज देश के सामने जो समस्याएँ हैं, वे केवल राष्ट्रीय स्तर की नहीं हैं। देश की अनेक समस्याएँ मानवीय स्तर की हैं। उनके समाधान हेतु व्यापक स्तर पर काम करना होगा। समस्या का समाधान द्विपक्षीय होना चाहिए। अध्यात्म, हृदय-परिवर्तन के प्रयोग से समाधान खोजे और राजनीति, व्यवस्था एवं कानून से उसका समाधान करे।

प्रधानमंत्री ने कहा – ''आचार्यजी! देश में समस्याएँ बहुत हैं किन्तु मेरे दिमाग पर उनका बोझ नहीं है। मुझे एक ही समस्या का बोझ लगता है। वह समस्या है देश के नागरिकों की धार्मिक सिद्धान्तों के प्रति अनास्था में वृद्धि। इससे हमारा देश भावात्मक दृष्टि से कमजोर होता

जा रहा है। हर आदमी मौके का फायदा उठाने में लगा है। आज विकास का नाम लेते ही सबके सामने आर्थिक विकास की भावनाएँ आ जाती हैं। मानवता और नैतिकता के विकास की बात कहीं पीछे छूट जाती है। दोनों विकास समान स्तर पर हों, यह बहुत जरूरी है। केवल टेक्नोलॉजी और विज्ञान का विकास देश को डुबो देगा। विज्ञान और टेक्नोलॉजी मानवता के फायदे के लिए कैसे हों, हमें यह सन्तुलन बनाना है। सरकार साधन दे सकती है, सहयोग दे सकती है। पर सन्तुलन कायम करने की क्षमता धर्म में है। आचार्य श्री सन्तुलन बनाने का काम कर रहे हैं, इस बात की मुझे प्रसन्नता है।''

आचार्य श्री ने कहा – ''हमने इस विषय में चिन्तन किया है। इस दृष्टि से कुछ प्रयोग भी निर्धारित किये हैं। यह काम पुस्तकों से नहीं, प्रयोगों से होने का है। आपकी समस्या के समाधान में जीवन विज्ञान कारगर हो सकता है।''

शिक्षा के साथ सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्य

शिक्षा और जीवन-मूल्य का मुद्दा उठाते हुए आचार्य श्री ने पूछा – ''शिक्षा के बारे में आपने जो काम किया, वह तो ठीक है, पर क्या उससे समस्या का समाधान हो गया?'' प्रधानमंत्री बोले – ''शिक्षा के साथ सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का योग होना आवश्यक है। इन मूल्यों का शिक्षा में प्रवेश कैसे हो? यह एक कठिन काम है। अब तक इसका समाधान नहीं मिल रहा है।'' आचार्य श्री ने कहा – ''हमने इस विषय में चिन्तन किया है। इस दृष्टि से कुछ प्रयोग भी निर्धारित किये हैं। यह काम पुस्तकों से नहीं, प्रयोगों से होने का है। आपकी समस्या के समाधान में जीवन विज्ञान कारगर हो सकता है।'' □

राजनीति में आने वाले लोगों में नैतिकता जरूरी : आचार्य महाश्रमण

अहमदाबाद। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने कहा कि राजनीति सेवा का माध्यम है। राजनीति में जो लोग आते हैं, उनमें नैतिकता का होना जरूरी है। आचार्यश्री शाहीबाग के तेरापंथ भवन में 'लोकतंत्र और अणुव्रत' विषय पर आयोजित संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे।

अणुव्रत अमृत महोत्सव के तहत महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति अहमदाबाद एवं अणुव्रत समिति अहमदाबाद की ओर से आयोजित संगोष्ठी में आचार्य प्रवर ने कहा कि शासन की दो प्रणालियां हैं – लोकतंत्र व राजतंत्र। इन प्रणालियों में अंतर हो सकता है, मार्ग अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन दोनों का लक्ष्य एक ही है कि प्रजा सुखी रहे, व्यवस्था अच्छी रहे और कानून-व्यवस्था का शासन चले। चुनाव लोकतंत्र की प्रक्रिया है। यह बहुत जरूरी है कि चुनाव अच्छे तरीके से हों। अणुव्रत में संयम व त्याग की बात है। जीवन में संयम रखना चाहिए। लोकतंत्र में भी संयम जरूरी है।

गुजरात के चुनाव आयुक्त संजय प्रसाद ने कहा कि अणुव्रत की आचार संहिता स्वस्थ लोकतंत्र के लिए उपयोगी है। गुजरात उच्च न्यायालय के पूर्व जज जस्टिस सुबोध शाह ने छोटे-छोटे अणुव्रतों को जीवन के लिए

काफी उपयोगी बताया। राजस्थान पत्रिका के संपादकीय प्रभारी उदय कुमार पटेल ने भी विचार रखे।

कार्यक्रम की शुरुआत दीपक संचेती व विजयराज सुराणा ने अणुव्रत गीत से की। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सुरेश बागरेचा ने स्वागत वक्तव्य और अणुविभा उपाध्यक्ष राजेश सुराणा ने विषय का विवरण दिया।

चरित्र की सुगंध से जीवन को उन्नत बनाएँ

वडोदरा। जन-जन को आलोक बाँटने वाले, शांतिदूत युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण 6 अप्रैल को अणुव्रत यात्रा के साथ वासद से विहार कर ओमकार तीर्थ पदमला (जिला वडोदरा) पधारे। यहाँ श्री जे. एन. पटेल विद्यालय में अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान कार्यक्रम का आयोजन हुआ। तत्पश्चात् प्राचार्य अदिति बहन दवे के निर्देशन में विद्यालय के विद्यार्थी पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में ओमकार तीर्थ पदमला पहुँचे।

विद्यार्थियों को प्रेरक उद्‌बोधन देते हुए आचार्य श्री ने फरमाया कि अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं। अणुव्रत यात्रा के मुख्य तीन उद्देश्य हैं - सद्‌भावना, नैतिकता एवं नशामुक्ति। सद्‌भावना का तात्पर्य है जाति या संप्रदाय के आधार पर किसी के साथ दुर्व्यवहार नहीं करना - हिंसा नहीं करना। नैतिकता के बिना जीवन में सुख-शांति की उपलब्धि नहीं हो सकती। नशा बहुत बुरी चीज है। नशे के कारण तन, मन और धन तीनों की बर्बादी होती है। ज्ञान का प्रकाश एवं सच्चरित्र की सुगंध होगी तो जीवन उन्नत बनेगा। अणुव्रत पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार एवं मुनिश्री योगेश कुमार ने भी बच्चों को प्रेरणा दी। मनोज सिंघवी, अर्जुन मेडतवाल, पायल चोरडिया, सुभाषजी मेहता आदि ने विद्यार्थियों को मार्गदर्शन दिया।

अणुव्रत असांप्रदायिक धर्म है

लाडनूं। अणुव्रत अमृत महोत्सव के उपलक्ष में व्याख्यानमाला का प्रथम पुष्प साध्वी लक्ष्य प्रभा के सान्निध्य में ऋषभ द्वार में आयोजित हुआ। इसमें प्रोफेसर समणी कुसुम प्रज्ञा ने कहा कि अणुव्रत एक असांप्रदायिक धर्म है। अणुव्रत में वर्ग, जाति, धर्म, संप्रदाय, नस्ल आदि को लेकर कोई भेदभाव नहीं है। अणुव्रत उपासना धर्म न होकर चारित्रिक धर्म है। किसी भी धर्म की उपासना करने वाला व्यक्ति अणुव्रती हो सकता है। प्रामाणिक जीवन जीने वाला प्रत्येक व्यक्ति अणुव्रती हो सकता है। आचार्य तुलसी ने अर्जन के साथ विसर्जन का महामंत्र भी दिया था। साध्वी लक्ष्य प्रभा ने कहा कि संयम सभी समस्याओं का समाधान है।

इस अवसर पर अणुव्रत समिति लाडनूं द्वारा राष्ट्रीय अणुव्रत व्याख्यानमाला का संयोजक बनाये जाने पर प्रोफेसर आनंद प्रकाश त्रिपाठी तथा राष्ट्रीय अणुव्रत लेखक मंच का संयोजक बनाये जाने पर डॉ. वीरेंद्र भाटी मंगल का सम्मान किया गया। प्रो. त्रिपाठी ने अमृत महोत्सव वर्ष के दौरान देशभर में 75 व्याख्यान कराने का संकल्प व्यक्त किया।

अणुव्रत जगाता है वसुधैव कुटुंबकम् का भाव

अणुव्रत विश्व भारती की ओर से अणुव्रत अमृत महोत्सव के तहत 9 अप्रैल को ऑनलाइन व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य वक्ता जाने-माने साहित्यकार, गीतकार, लेखक एवं संपादक डॉ. नरेंद्र शर्मा 'कुसुम' ने 'अणुव्रत और हम' विषय पर कहा कि अणुव्रत मैं की नहीं, अपितु हम की चेतना जागृत करता है। यह हमें स्वार्थ से ऊपर उठकर निःस्वार्थ की चेतना विकसित करने की बात करता है। अणुव्रत का मानना है

कि हर व्यक्ति को अपने कार्यस्थल पर प्रामाणिक होना चाहिए। प्रामाणिकता की तिलांजलि से भ्रष्टाचार बढ़ता है। अतः व्यक्ति को संयमी और प्रामाणिक बनकर जीवन में आगे बढ़ना चाहिए। अणुव्रत व्यक्ति सुधार की बात करता है। व्यक्ति सुधार से समाज सुधार और विश्व सुधार संभव है। सचमुच अणुव्रत वसुधैव कुटुंबकम् का भाव प्रदीप्त करता है।

इससे पहले अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष अविनाश नाहर ने डॉ. नरेंद्र शर्मा 'कुसुम' के जीवन वृत्त पर प्रकाश डालते हुए उनका स्वागत और अभिनंदन किया। व्याख्यान का विषय प्रवर्तन करते हुए अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन ने कहा कि डॉ. कुसुम जैसा व्यक्तित्व ही इस विषय के साथ न्याय कर सकता है क्योंकि विषय का फलक बहुत विस्तृत है और डॉ. कुसुम का व्यक्तित्व भी अत्यंत महान है। अणुव्रत व्याख्यानमाला के राष्ट्रीय संयोजक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी रत्नेश ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कर्नाटक में जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम से सकारात्मक बदलाव

बेंगलुरू। कर्नाटक सरकार के राज्य शैक्षणिक शोध एवं प्रशिक्षण विभाग (डी.एस.ई.आर.टी.) के निर्देशन में संचालित जीवन विज्ञान ऑनलाइन पाठ्यक्रम की गति-प्रगति एवं आवश्यक संशोधन-संवर्द्धन के उद्देश्य से अणुविभा के जीवन विज्ञान विभाग एवं डी.एस.ई.आर.टी. के पदाधिकारियों की बैठक गांधीनगर स्थित तेरापंथ भवन में हुई।

इसमें डी.एस.ई.आर.टी. के शिक्षा अधिकारियों ने बताया कि जीवन विज्ञान ऑनलाइन पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सकारात्मक परिवर्तन

दृष्टिगोचर हो रहे हैं। कर्नाटक जीवन विज्ञान अकादमी के संयोजक ललित आच्छा ने बताया कि कर्नाटक में वर्ष 2004 से जीवन विज्ञान की गतिविधियों का संचालन हो रहा है। डी. एस. ई. आर. टी. निदेशिका सुमंगला ने बताया कि जीवन विज्ञान बच्चों एवं शिक्षकों के लिए बहुत ही उपयोगी उपक्रम है जो भारत के बेहतरीन भविष्य के निर्माण में कारगर सिद्ध होगा।

डी.एस.ई.आर.टी. की सह-निदेशिका गिरिजमा, सह-निदेशक विश्वनाथ, सदस्य शिवन्ना, मंजूनाथ, प्रभा, प्रशांत तथा अणुविभा की उपाध्यक्ष माला कातरेला, सहमंत्री राजेश चावत, जीवन विज्ञान के राष्ट्रीय परामर्शक मूलचन्द नाहर, जीवन विज्ञान विभाग के राष्ट्रीय संयोजक रमेश पटावरी, राष्ट्रीय प्रशिक्षण प्रभारी राकेश खटेड़, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य कैलाश बोराणा, सुरेश दक, कर्नाटक जीवन विज्ञान अकादमी संयोजक ललित आच्छा, यशवन्तपुर तेरापंथ सभा अध्यक्ष गौतमचंद मूथा, तेरापंथ ट्रस्ट अध्यक्ष प्रकाश बाबेल तथा स्थानीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल ने बैठक में भाग लिया। □

हमसे जुड़ने के लिए
नीचे दिए गए चिह्न को क्लिक करें

अणुव्रत आचार संहिता

- मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा। आत्म-हत्या नहीं करूँगा। भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।
- मैं आक्रमण नहीं करूँगा। आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूँगा। विश्व-शांति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयत्न करूँगा।
- मैं हिंसात्मक एवं तोड़फोड़-मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।
- मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा। जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को उच्च/निम्न नहीं मानूँगा। अस्पृश्य नहीं मानूँगा।
- मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा। साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा।
- मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा। अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाऊँगा। छलपूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा।
- मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।
- मैं चुनाव के संबंध में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।
- मैं सामाजिक कुरुढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।
- मैं व्यसनमुक्त जीवन जीऊँगा। मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तंबाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा।
- मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा। हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा। पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

उपरोक्त संकल्पों में से सभी या अपने भावानुसार संकल्प लेने के लिए क्लिक करें..

अणुव्रत अनुशास्ताओं के पावन प्रेरणा पाथेय के साथ मासिक 'अणुव्रत' पत्रिका गत 68 वर्षों से अनवरत प्रकाशित हो रही है। देशभर के प्रसिद्ध साहित्यकारों की रचनाओं तथा प्रखर चिंतकों के आलेखों को भी इस पत्रिका में स्थान दिया जाता है। 'अणुव्रत' पत्रिका का मुद्रित अंक प्रतिमाह नियमित रूप से अपने घर पर मंगवाने के लिए आज ही सदस्य बनें।

सदस्यता शुल्क विवरण

एक अंक	-	₹ 60
त्रैवर्षीय	-	₹ 1800
पंचवर्षीय	-	₹ 3000
दसवर्षीय	-	₹ 6000
योगक्षेमी	-	₹ 5000

बैंक विवरण :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
कैनरा बैंक
A/C No. 0158101120312
IFSC : CNRB0000158

पत्रिका की सदस्यता हेतु ऑनलाइन भुगतान के लिए
https://rzp.io/l/avbp
पर क्लिक करें या इस QR कोड को स्कैन करें